श्रीधरम

(इस स्तम्भ का उद्देश्य साहित्यिक गतिविधियों-घटनाओं को एक साझा-मंच प्रदान करना है. कई बार छोटी जगहों में सार्थक कार्यक्रम होते हैं या किसी महत्त्वपूर्ण लेखक का निधन हो जाता है, लेकिन उनकी खबर मुख्यधारा की पत्राकारिता में नहीं आ पाती. इसी प्रकार अंतरजाल पर भी कई बार महत्वपूर्ण जानकारी और मुद्दे उछलते हैं, बहसें होती हैं जिसकी सूचना प्रिंट माध्यम के पाठकों तक नहीं पहुँच पाती. अतः इस कॉलम को सामूहिक मंच बनाने में आपका सहयोग चाहिए. आप भी अपने शहर-मोहल्ले में होने वाली साहित्यिक गतिविधियों (सम्भव हो तो मंगल फॉण्ट, ओपन फाइल में) से हमें निम्न पते-मेल पर अवगत करायें, हम साभार उसे शामिल करेंगे.)

सभा/संगोष्ठी

चार खंडों में नंद चतुर्वेदी रचनावली का लोकार्पण

उदयपुर 4 अगस्त. नन्द बाबू आधुनिक कविता के पुरोधा थे, वे समाजवादी कार्यकर्ता थे, किंतु उनकी कविता राजनीतिक एजेंडे के बजाए समय और परिस्थितियों के मर्म का उद्घाटन करती है. कविता उनके लिए मानवानुभूति वाले आत्मानुभूति का विषय था. उक्त विचार साहित्य अकादेमी नई दिल्ली तथा नन्द चतुर्वेदी फाउंडेशन उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में नंद चतुर्वेदी जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात साहित्यकार नंद किशोर आचार्य ने व्यक्त किए.

आचार्य ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि लोकार्पण कार्यक्रम में मुझे नंद बाबू को याद करने का अवसर मिला. उन्होंने कहा कविता अपने आप में ज्ञान की प्रक्रिया है, कविता पूर्व निर्धारित सत्य का आकलन नहीं है, कविता काल संबाहक होती है काल बाधित नहीं होती, नन्द बाबू की कविता भी काल बाधित नहीं है. नंद बाबू की कविता को स्थूल सन्दर्भ से परे बताते हुए आचार्य ने कहा लेखकीय स्वाधीनता और गरिमा नंद बाबू में देखने को मिलती है. आचार्य ने नंद बाबू के जीवन को प्रेरक बताते हुए उदाहरण से बताया कि अपनी किसी चूक को भी वे बड़ी उदारता से स्वीकार करते थे, जो लेखकों के लिए अनुकरणीय है. उन्होंने कहा कि नन्द बाबू समय की भयावहता को समझकर भी उससे आतंकित नहीं थे, उनकी कविता की ताकत है कि वह पाठक को सोचने पर मजबूर कर देती है. इससे पूर्व आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ माधव हाड़ा ने कहा कि नंद चतुर्वेदी ने स्वयं को कभी खूंटे से नहीं बाँधा, भले ही उनको समाजवादी कवि कहा गया किन्तु हमेशा उनका कवि आगे रहा, राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं, वे जीवन के अभाव की कविता में राग की कविता के कवि हैं.

नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रो अरुण चतुर्वेदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं राजनीति शास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते उन्हें साहित्यकार के रूप में बारीकी से नहीं देख पाता हूँ, उन्होंने उनकी कविता के उदाहरण देकर बताया कि राज्य से उम्मीद उनकी कविता में है, वे समझ के साथ समय की चेतना को परिभाषित करते हैं. उद्घाटन सत्र में ही आलोचक डा पल्लव द्वारा चार खंडों में संपादित और राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नंद चतुर्वेदी रचनावली का लोकार्पण किया गया. परिसंवाद के प्रथम सत्र में नंद चतुर्वेदी के काव्य के महत्व का प्रतिपादन करते हुए आलोचक प्रो शंभु गुप्त ने कहा कि नन्द बाबू मे आत्म निरीक्षण, आत्म संशोधन की भावना है और वे आत्मसजग भी हैं. नन्द बाबू की कविताओं मे रूपक का प्रयोग है जिसमें महाभारत प्रमुख है. उन्होंने कहा कि हमें अपने रूपकों मिथकों की पुनर्व्याख्या करनी चाहिए. 'आज्ञा बलवती है राजन' काव्य संकलन में महाराज और महारानी इसी तरह के प्रयोग हैं.